ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14 Vol.-5, No.-I, PP-144-149, YEAR JUNE 2016

वृद्धों की सामाजिक प्रास्थिति एवं समस्याएं (एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण)

❑ डॉ0 राजीव कुमार श्रीवास्तव

कोई भी सामाजिक व्यवस्था अथवा मूल्य एक समय वि ोष की सीमाओं तक ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण हो सकते हैं। उदाहरणार्थ– 20वीं भाताब्दी के आरम्भ में तेजी से नगरीकरण तथा औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने लोगों को संयुक्त परिवार से अलग होकर उसे छोड़ने का अवसर दिया। इसके फलस्वरूप एक ओर जहॉ पीढ़ियों के बीच संघर्ष की सम्भावना कम हो गई, वहीं दूसरी ओर परिवार के वृद्धों को अन्य सदस्यों से अलग अकेले स्थानों पर रहने के कारण उन्हें सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इस प्रवृत्ति ने व्यक्तिवादी और भौतिकवादी मूल्यों को बढ़ावा दिया है, जो वृद्धों में अलगाव तथा अकेलेपन को पैदा करता है और यहीं से वृद्धों का जीवन एक समस्या का रूप लेने लगता है।

60 वर्ष अथवा इससे अधिक व्यक्तियों को वृद्ध के रूप में जाना जाता है। इस अवस्था के लोग स्वयं को आज की परिस्थितियों में परिवार एवं समाज द्वारा उपेक्षित महसूस करते हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ के अनुसार, वि व में प्रत्येक 10 में से एक व्यक्ति 60 वर्ष अथवा इससे अधिक उम्र का है। औसत आयु, जन्मदर एवं मृत्युदर तीनों पहलू वृद्धों की संख्या के अध्ययन के लिए मुख्य मापदण्ड के रूप में इस्तेमाल किये जाते हैं। विकास ाील दे ाों में सामान्य औसत आयु 61 वर्ष है, जबकि विकसित दे ाों में यह 74 वर्ष है। जन्म दर में कमी के साथ–साथ मृत्युदर में भी कमी आ रही है। ये दोनों पहलू वृद्ध जनसंख्या की पहचान के प्रमुख मापदण्ड हैं। जन्मदर में परिवर्तन न केवल वृद्धों की आबादी पर अपितु, उनके रहन–सहन पर भी प्रभाव पड़ता है क्योंकि जन्मदर में कमी के फलस्वरूप आने वाले समय में वृद्धों की देखभाल करने वालों की संख्या कम हो जाएगी, जिसके परिणामस्वरूप वृद्धजनों की सामाजिक और भावनात्मक सुरक्षा की समस्या उत्पन्न हो जाने की सम्भावना व्यक्त की जा सकती है, लेकिन भारतीय समाज में वर्तमान अनुमानित आंकड़े संकेत देते हैं कि भारत एक ओर वृद्धों का दे ा बनता जा रहा है। 2001 की जनगणना के अनुसार, भारत में वृद्धों की संख्या 7 करोड़ 66 लाख 22 हजार 321 है, इनमें पुरूषों की संख्या 3 करोड़ 88 लाख, 53 हजार 994 है और दूसरी ओर समाज में आ रहे तीव्र परिवर्तनों के कारण परिवार में वृद्धों की देखरेख करने की क्षमता घटती जा रही है और वे भारतीय मूल्य भी ि ाथिल पड़ते जा रहे हैं, जो वृद्धों की देखरेख का समर्थन करते हैं।

इस सन्दर्भ में यदि भारतीय संस्कृति पर दृष्टि डाली जाय तो कहा जा सकता है कि वैदिक संस्कृति के आरम्भिक काल से ही वृद्धजनों को परिवार में सम्मानित स्थान देने तथा वृद्धावस्था को प्रत्येक प्रकार से सुरक्षित बनाने के लिए अनेक व्यवस्थाएं बनाई गई। इनमें संयुक्त परिवार सबसे महत्वपूर्ण व्यवस्था थी, जिसके माध्यम से परिवार केसमस्त आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक तथा धार्मिक अधिकार वृद्धों को सौंपकर दूसरे सदस्यों को उनके निर्दे ाों के अनुसार कार्य करना एक सामाजिक प्रतिमान बना दिया गया था। इस व्यवस्था ने भारतीय समाज में वृद्धों को आर्थिक, भावनात्मक सुरक्षा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आश्रम तथा पुरूषार्थ व्यवस्था ने व्यक्ति के दायित्व इस तरह निर्धारित किये कि जिससे वृद्धजन मानसिक तनावों से दूर रहकर अपने जीवन के उपयोगी अनुभवों से समाज को लाभान्वित कर सकें।

❑ विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, समन्वयक– उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, पी0जी0 कालेज बाँसडीह, बलिया (उ0प्र0) भारत

भारत में भी 'वृद्धावस्था' तथा 'वृद्ध कल्याण केन्द्र' जैसी संस्थाएं भाहरों में स्थित हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1999 को 'वरिष्ठ नागरिक वर्ष' घोषित कर इस ओर सबका ध्यान आकर्षित किया था। भारत ने भी वर्श 2000 को 'राष्ट्रीय वृद्ध वर्ष' के रूप में मनाया। मानव जीवन में वृद्धावस्था ही वह अवस्था है, जब उसके पास ज्ञान, अनुभव, विचारों में सुदृढ़ता और उसकी सोच विकसित होकर कुछ सार्थक पहल कर समाज का मार्ग द ान करने की क्षमता होती है और इसी से वह समाज के लिए वि वसनीय और सम्मानजनक पात्र बन पाता है, किन्तु वर्तमान समय में परिवर्तन की दूसरी प्रक्रियाओं के साथ ही संचार साधनों जैसे टी0वी0, रेडियो, कम्प्यूटर, सीडी, सेलफोन तथा इन्टरनेट ने युवाओं को जो ज्ञान तथा सूचनाएं दी हैं उससे एक ओर जहां वृद्धों का ज्ञान और अनुभव बौना–सा हो गया है, वहीं दूसरी ओर वृद्धों की स्थिति को उपेक्षित तथा मानवीय सम्बन्धों को असंवेदन ाील बना दिया है। वृद्धावस्था में व्यक्ति की भाारीरिक कमजोरी और दूसरी ओर परिवार तथा समाज से मिलने वाला प्रतिकूल व्यवहार उसे मानसिक रूप से भी कमजोर बना देता है। बदलती हुई भारतीय सामाजिक संरचना जिसमें एकाकी होना, संचार, यातायात के साधनों का विकास, बदलते सामाजिक मूल्य, ि ाक्षा, व्यक्तिवादिता आदि ने वृद्धों की सामाजिक स्थिति को चुनौती दी है। परिणामस्वरूप, वे स्वयं को पराधीन, कमजोर, असहाय और उपेक्षित महसूस करते हैं, जिससे उन्हें भाारीरिक व मानसिक क्षति पहुंचती है।

वर्तमान समय में भारत में वृद्धों की स्थिति सुधारने से सम्बन्धित किये जाने वाले प्रयासों की चर्चा करना महत्वपूर्ण होगा। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार, भारत में सामाजिक न्याय मन्त्रालय द्वारा 1992 में वृद्धों को सहायता देने का एक व्यापक कार्यक्रम तैयार किया गया। इसके अन्तर्गत वृद्धावस्था गृह स्थापित करने वाले, वृद्धों को सुविधाएं प्रदान करने वाले तथा वृद्धों के लिए सचल चिकित्सालय चलाने वाले ऐच्छिक संगठनों को वित्तीय सहायता देनी आरम्भ की गई। इसके अन्तर्गत 'डे केयर सेंटर', 'वृद्धावस्था गृह', 'वृद्धजन देख–रेख केन्द्र' तथा सचल चिकित्सालय स्थापित किये जा चुके हैं।

वर्ष 2007–08 के अनुमानित आंकड़ों के आधार पर वृद्धाश्रमों की संख्या एक हजार से अधिक वृद्धों के लिए किये जाने वाले प्रयत्नों में मुख्य निम्न प्रकार से हैः–

1. वृद्धावस्था गृह
2. वृद्धजन देख–रेख केन्द्र
3. सचल चिकित्सालय सेवाएं
4. गैर संस्थात्मक सेवाएं
5. अन्य सुविधाएं

(i) पें ान योजना 75 रूपये मासिक से लेकर 300 रूपये तक

(ii) अन्नपूर्णा योजना

(iii) सभी स्वीकृत बैंको द्वारा 60 वर्ष से अधिक के वृद्धों को 0.75 प्रति ात अधिक ब्याज दिया जाता है।

(iv) जिन वृद्धों की आयु 65 वर्ष से अधिक है, उन्हें आयकर में वि ोष छूट दी जाती है।

(v) रेल किराये में 25 प्रतिशत छूट का प्रावधान।

(vi) सीनियर सिटीजन स्कीम के अन्तर्गत 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों को जमा रा ि ा पर अन्य लोगों को मिलने वाले ब्याज से एक प्रति ात अधिक है। वर्ष 2007–08 के बजट में वृद्धाश्रमों के निर्माण हेतु सरकार द्वारा एक करोड़ रूपये की धनरा ि ा प्रदान किये जाने का प्रावधान रखा गया है। 31 दिसम्बर 2007 तक भारत सरकार द्वारा वृद्धों की सहायतार्थ 282, गैर सरकारी संस्थाओं को 9.30 करोड़ रूपये की वित्तीय सहायता दी जा चुकी है।

उपलब्धियाँ: निर्द ान में 51 प्रति ात स्त्रियां तथा 49 प्रति ात पुरूष हैं। 51 प्रति ात उत्तरदाताओं में से 31 प्रतिशत स्त्रियां विधवा, 19 प्रति ात स्त्रियां विवाहित, 1 प्रति ात अविवाहित पाई गई। 49 प्रति ात उत्तरदाताओं में से 11 प्रति ात पुरूष विधुर, 36 प्रति ात विवाहित और 2 प्रति ात पुरूश उत्तरदाता तलाक ुदा पाये गये। 100 उत्तरदाताओं में से 90 प्रति ात उत्तरदाता हिन्दू तथा भोष 10 प्रति ात उत्तरदाता मुस्लिम हैं। हिन्दुओं में विभिन्न जातियों के उत्तरदाता भाामिल हैं ब्राम्हण उत्तरदाताओं का प्रति ात 24, क्षत्रिय 23, वै य 11 जबकि 42 उत्तरदाता अन्य जातियों के सदस्य हैं, जैसे– भाूद्र, कुम्हार, लुहार, बढ़ई आदि। परिवार क स्वरूप के दृष्टिकोण से 71 प्रति ात उत्तरदाता संयुक्त परिवार से, जबकि 29 प्रति ात उत्तरदाता एकाकी परिवारों से जुड़े हैं। कुल उत्तरदाताओं में से 56 प्रति ात उत्तरदाता अपने जीवन के 60 वर्ष पूरा करने के बाद भी आत्मनिर्भर हैं, जबकि 44 प्रति ात उत्तरदाता अपने परिजनों पर आश्रित है।

अध्ययन के अन्तर्गत सबसे अधिक उत्तरदाता 60 वर्ष से 70 वर्ष की आयु समूह में पाये गये, जबकि सबसे कम 91 वर्ष से अधिक 2 प्रति ात उत्तरदाताओं से सम्पर्क करने का अवसर मिला। 81, वर्ष से 90 वर्ष आयु समूह में 8 प्रति ात तक 71 वर्ष से 80 वर्ष के आयु समूह के उत्तरदाताओं की संख्या 26 प्रति ात थी। उत्तरदाताओं की मासिक आय से स्पष्ट होता है कि 56 प्रति ात उत्तरदाता 60 वर्ष से अधिक 80 वर्ष तक की आयु में भी किसी न किसी प्रकार से आत्मनिर्भर है। यहां उल्लेखनीय बात है कि इस आयु में वृद्धों ने स्वयं को, कृषि, कृषि मजदूरी, दुकान, फूल बेचने का काम, मदर डेयरी में काम, नौकरी, प्रोपर्टी डीलर, ब्याज पर रूपया देकर, मकान किराये पर देकर आदि से जीवकोपार्जन में लगाया हुआ है। 44 प्रति ात उत्तरदाता किसी न किसी रूप में अपने परिवार के सदस्यों पर आश्रित है। सबसे अधिक उत्तरदाता (35 प्रति ात) एक हजार से पांच हजार प्रतिमाह आय रखते हैं, उसके बाद 13 प्रति ात उत्तरदाता 6000 से 10000 के बीच, 5 प्रति ात 11000 से 15000 के बीच तथा सबसे कम उत्तरदाता केवल एक प्रति ात 16000 से 20000 एक प्रति ात 21000 से 25000 तक एक प्रति ात उत्तरदाता 26000 से अधिक आय रखते हैं। साक्षरता की दृष्टि से 56 प्रति ात सूचनादाता साक्षर तथा 44 प्रति ात निरक्षर हैं। साक्षरों में 23 प्रति ात महिलायें तथा 33 प्रति ात पुरूष हैं तथा निरक्षर में 28 प्रति ात महिलाएं और 16 प्रति ात पुरूष सूचनादाता हैं।

तालिका संख्या 01

उत्तरदाताओं की राजनीति में रूचि तथा मतदान

राजनीति में रूचि/मतदान	संख्या	प्रतिशत	स्त्रियां	पुरूष
राजनीति में रूचि रखते हैं	52	52	22	30
राजनीति में रूचि नहीं रखते हैं	48	48	27	21
कुल योग	10	100	49	51
मतदान करते हैं	94	94	51	49
मतदान नहीं करते हैं	06	06	46	54
कुल योग	100	100	97	103

तालिका स्पष्ट करती है कि 52 प्रति ात उत्तरदाता की संख्या अधिक है, जबकि 48 प्रति ात वृद्ध

साथ ही मतदान करने वाले उत्तरदाताओं की मात्रा 94 प्रति ात है जो चौकाने वाली है। केवल 6 प्रति ात उत्तरदाता हैं, जो मतदान नहीं करने में रूचि रखते हैं। उनका मानना है कि दे ा की राजनैतिक व्यवस्था से वे लोग सन्तुष्ट नहीं हैं।

तालिका संख्या 02

वृद्ध अपना खाली समय व्यतीत करते हैं

साधन	संख्या	प्रतिशत
टी0वी0 देखकर	22	22
पार्क में बैठकर	06	06
अपनी आयु के लोगों के साथ गप ाप करके	28	28
परिवार के लोगों के साथ किसी अन्य प्रकार से	28	28
मन्दिर जाकर, कीर्तन भजन करके, अकेले	16	16
कुल योग	100	100

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि वृद्धावस्था में अधिकां ा उत्तरदाता अपनी आयु के लोगों के साथ गप– ाप 28 प्रति ात और इतना ही 28 प्रति ात अपने परिवार के बीच में तथा 22 प्रति ात टी0वी0 देखकर अपना खाली समय व्यतीत करते हैं तथा 16 प्रति ात उत्तरदाता जो टी0वी0, पार्क या अपने परिवार के बीच में अपना अधिक समय नहीं देते थे वे लोग मन्दिर जाकर, भजन कीर्तन करके या अकेले ही समय व्यतीत करते हैं। उपर्युक्त में 9 प्रति ात उत्तरदाता ऐसे पाये गये, जो टी0वी0, पार्क, अपनी आयु के लोगों के साथ और अपने परिवार के लोगों के साथ सभी तरीकों से अपना खाली समय व्यतीत करते हैं।

तालिका संख्या 03

वृद्धावस्था में सामंजस्य की समस्या

साधन	संख्या	प्रतिशत
वृद्धावस्था में सामंजस्य स्थापित करने में परे ाानी होती है	35	35
वृद्धावस्था में सामंजस्य स्थापित करने में परे ाानी नहीं होती है	65	65
कुल योग	100	100

तालिका स्पष्ट करती है कि 35 प्रति ात उत्तरदाता बताते हैं कि उन्हें अपने परिवार तथा आस–पास के वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में परे ाानी होती है। उदाहरण के लिए परिवार के लोग उन्हें अपनी बातचीत में भाामिल नहीं करते, उनसे बात जाती है। उन्हें लगता है कि परिवार के लोग उनके तरीके से चलना नहीं चाहते। इस तरह से कुल मिलाकर उनकी वृद्धावस्था के कारण उन्हें परिवार में कम महत्व दिया जाता है या कभी–कभी दिया ही नहीं जाता। बहुत कम अवसर होते हैं जब उन्हें घर से बाहर निकलने का मौका मिलता है, जबकि दूसरी ओर 65 प्रति ात उत्तरदाताओं ने इसके विपरीत विचार

दिये कि वृद्धावस्था उनके परिवार के साथ सामंजस्य स्थापित करने में किसी प्रकार का बाधक नहीं है।

तालिका संख्या 04
वृद्धावस्था के कारण परेशानियॉ

साधन	संख्या	प्रतिशत
भाारीरिक रूप से	41	41
मानसिक रूप से	28	28
भाारीरिक तथा मानसिक दोनों	16	16
किसी प्रकार की परे ाानी नहीं	15	15
कुल योग	100	100

वृद्धावस्था में वृद्धों की परे ाानियां पूछे जाने पर 41 उत्तरदाता बताते हैं कि उन्हें भाारीरिक परे ाानियां जैसे– कमजोरी, हाथ–पैरों में दर्द, ब्लड प्रे ार, हृदय सम्बन्धी रोग ादि होते हैं, जबकि 28 प्रति ात ने केवल मानसिक परे ाानियों का जिक्र किया। जैसे– अकेलापन, खालीपन, आर्थिक समस्या, परिवार के सदस्यों का व्यवहार आदि। साथ ही 16 प्रति ात उत्तरदाताओं ने भाारीरिक तथा मानसिक दोनों परे ाानियों की बात कही, जबकि 15 प्रति ात उत्तरदाताओं का मानना है कि उन्हें किसी प्रकार की कोई परे ाानी नहीं है, उनका ऐसा मानना उनके आत्मवि वास, जीवन के प्रति उत्साह और परिवार के प्रति लगाव को द र्ाता है।

निष्कर्षः उपर्युक्त पूर्ण वि लेषण के प्रका ा में यह कहा जा सकता है कि अधिसंख्यक सूचनादाता (56 प्रति ात) कहीं न कहीं अपनी आजीविका के लिए कार्यरत हैं। अधिसंख्यक सूचनादाता (52 प्रति ात) राजनीति में रूचि रखते हैं तथा वे अधिकां ातः (94 प्रति ात) मतदान में भाग लेते हैं। खाली समय के सदुपयोग के संबंध में देखा गया कि 28 प्रति ात सूचनादाता परिवार के साथ समय व्यतीत करके, 22 प्रति ात टी0वी0 देखकर, 6 16 प्रति ात मंदिर आदि धार्मिक गतिविधियों में तथा 9 प्रति ात उपर्युक्त समस्त गतिविधियों में अपने खाली समय के सदुपयोग करते हैं। अध्ययन के अधिकां ा सूचनादाता (65 प्रति ात) वृद्धावस्था के कारण सामंजस्य स्थापित करने में किसी कठिनाई का अनुभव नहीं करते। अधिकां ा सूचनादाताओं (76 प्रति ात) को परिवार के सदस्यों से प्यार व सम्मान प्राप्त होता है, जबकि 24 प्रति ात इस सम्बन्ध में अभाव को महसूस करते हैं। वृद्धों की सहायता एवं सुरक्षा हेतु चलाई जा रही भाासकीय योजनाओं से मात्र 48 प्रति ात सूचनादाता ही अवगत हैं। वृद्धों को वृद्धाश्रम भेजने के प्रत्युत्तर में अधिकां ा सूचनादाता (76 प्रति ात) इसे अनुचित तथा मात्र 24 प्रति ात उचित बताते हैं। वृद्धावस्था के कारण अनुभूत परे ाानियों में 41 प्रति ात भाारीरिक 28 प्रति ात मानसिक तथा 16 प्रति ात भाारीरिक व मानसिक दोनों प्रकार की परे ाानियों से त्रस्त पाये गये। अध्ययन के मात्र 15 प्रति ात उत्तरदाता किसी भी प्रकार की परे ाानी का अनुभव नहीं करते पाये गये।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि बदली सहयोग करना होगा। जिससे अनुभवी वृद्ध और कार्य ाील युवा मिलकर समाज को एक नई दि ाा देकर समाज का नव–निर्माण कर सकते हैं। वहीं

दूसरी ओर युवा, वृद्धों को एक समस्या न मानकर उन्हें अपना उत्तरदायित्व समझें। साथ ही आने वाली पीढ़ियों में यह सोच विकसित करें कि वृद्ध माता–पिता जीवन की एक अनमोल धरोहर हैं, जिसे जीवन में हर व्यक्ति केवल एक बार प्राप्त करता है और जीवन की इस अनमोल धरोहर को संभाल कर रखना इस जीवन का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व है। तभी विकराल रूप धारण करती हुई वृद्धों की समस्याओं का समुचित समाधान हो सकता है और यह सर्वविदित सत्य है कि आज जो व्यवहार हम अपने वृद्धों के प्रति करते हैं, वैसा ही व्यवहार हमारी आने वाली पीढ़ी हमारे प्रति करेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, जगजीत, 'प्रोबलम्स ऑफ द ओल्ड मैन इन बरेली', एन अनपब्लिस्ड थीसिस, पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़, 1962।
2. पुरोहित, सी0के0 एण्ड भार्मा, आर0, 'ए स्टडी ऑफ ऐज्ड 60 इयर एण्ड एबोव इन सोि ायल प्रोफाइल', इंडियन जनरल ऑफ जेरेन्टोलॉजी, 1972।
3. भारत की जनगणना, 2001।
4. हिन्दुस्तान दैनिक समाचार पत्र, 25 फरवरी रविवार, 2009 पृ0 2।
5. श्रीवास्तव, डॉ0 राजीव कुमार, वैश्वीकरण एवं समाज, वैभव लक्ष्मी प्रकाशन, वाराणसी 2012–2013

*****